सामाजिक और सांसकृतिक विकास के आलोक में रवीन्द्रनाथ और निराला का तुलनात्मक अध्ययन

श्वेता रस्तोगी

शोध छात्रा
हिन्दी–विभाग
कलकत्ता विश्वविद्यालय
फोन नं0–8013281659

साहित्य निरतंर गतिशील प्रक्रिया है। यह अपनी विस्तृत परिधि में एक ही देश, जाति भाषा के बंधन से मुक्त होकर विश्व में अबाध गति से मानवता का संचार करती है। किसी भी भाषा का सहित्यकार जब समाज की विद्रुपताओं को आत्मसात कर समय की माँग को पहचान कर उसे अपनी रचना में उकेरता है तो उसका उद्देश्य महज अपनी या किसी विशेष जाति, भाषा, समुदाय से नहीं जुड़ा होता है वरन वह पूरे विश्व को आलोकित एवं मानवतावाद की स्थापना करने के ही उद्देश्य से ही लिख रहा होता है। साहित्य और साहित्यकार 'मैं' और 'पर' की भावना से विमुक्त साहित्य और समाज के बीच सेतु का कर्य करता है। इस सम्बन्ध में हम दो भाषा के रचनाकार की बात करें तो रवींद्रनाथ टैगोर और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला दोनों ने ही अपनी लेखनी द्वारा विश्व को प्रभावित एवं विषमतामूलक समाज में एकता की स्थापना पर बल दिया है।

रवीन्द्रनाथ और निराला क्रमशः बंगला और हिन्दी के कवि हैं। पर जब हम इनके रचनागत वैशिष्ट्य का आकलन करते हैं तो दोनों ने ही पूरे विश्व को अपनी ज्ञान और चेतना से सराबोर करने का प्रयास किया हैं। इन दोनों की भाषा और पृष्ठभूमि में भले ही अंतर हो पर चेतना एवं मानव कल्याण की भावना एक सी हैं। कविगुरू रवीन्द्रनाथ बंगला साहित्य के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं तो महाप्राण निराला हिन्दी साहित्य के छायावादी कवियों मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

साहित्य आदान प्रदान की प्रकिया हैं। दो भाषाओं के लेखको की रचनाओं का जब हम साम्य और वैषम्य के आधार पर अंकन करते हुये अध्ययन करते हैं तो अध्ययन की यह प्रक्रिया 'तुलनात्मक अध्ययन' कहलाती है। अकादमिक अवधारणा के तहत तुलनात्मक अध्ययन एक व्यापक अवधारणा है जो दो भाषा के लेखकों की रचनाओं द्वारा दो संस्कृतियों, जातियों, भाषा, संस्कारों, सभ्यताओं में एकता स्थापित करता है। प्राचीनकाल से चली आ रही अध्ययन की यह प्रक्रिया केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसने कला, दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास, राजनीति इत्यादि को अपने विशाल कलेवर में समेंटकर एक व्यापक परिदृश्य के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है।

Scanned with CamScanner

कविगुरू रविन्द्रनाथ ने तुलनात्मक साहित्य को 'विश्व साहित्य' की संज्ञा से अभिहित किया है। उन्होंने कहा है।–**साहित्य का उद्देश्य समाज में मनुष्यता और समानता पैदा करना हैं, इसलिये कोई भी रचना चाहे जिस भाषा में लिखी गई हो, उसमें भाषिक, क्षेत्रियता, एवं राष्ट्रीय संकीर्णता नहीं आ सकती।**''[1] निराला ने भी **'रवीन्द्रनाथ–कविता कानन'** लिखकर यह प्रमाणित कर दिया कि दूसरी भाषा की रचना अनुवाद के माध्यम से जन–जन को प्रभावित कर सकती है।

रवीन्द्रनाथ और निराला दो व्यक्तित्वों की कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने से पहले उनकी पृष्ठभूमि को जान लेना अत्यंत आवश्यक है। 7 मई 1861 में कलकत्ता के जोड़साको में महर्षि देवेंद्रनाथ ठाकुर के गृह प्रांगण में चौदहवी संतान के रूप में कवि मनीषी रवीन्द्रनाथ का जन्म हुआ था। रवीन्द्रनाथ ने मूलतः बंगला भाषा में ही अपनी रचनाओं को लिखा पर उनके बहुमुखी चिंतन का प्रसार केवल बंगला भाषा तक ही सीमित नहीं था, बल्कि एक भाषा या काल की सीमा का अतिक्रमण कर पूरे विश्व को अपने ज्ञान से आप्लावित किया अर्थात उनके चिंतन ने पूरे विश्व में 'विश्वसाहित्य' का रूप ग्रहण कर लिया। बहुआयामी प्रतिभा के धनी रवीन्द्रनथ ने अध्ययन के जिस क्षेत्र को चुना उसे अपनी लेखनी एवं रचनात्मक प्रतिभा से एक नया आयाम दिया। वे श्रेष्ठ कवि, गीतकार, कथाकार, चित्रकार, लेखक, दार्शनिक, संगीतकार, शिक्षाविद, एवं उदारवादी मनुष्य थे। उनकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति ही उनकी नवनवोन्मेशशालिनी प्रतिभा का विकास और प्रसार करती है। उन्होंने अपनी प्रतिभा द्वारा न केवल बंगला साहित्य को ही नहीं वरन भारतीय संस्कृति और साहित्य को भी प्रभावित किया। उच्चवर्गीय परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी जातिगत भेदभाव और विषमतामूलक समाज का विरोध में समानता एवं विश्वबन्धुत्व पर जोर दिया।

निराला का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल राज्य में सन् 1896 में बसंत पंचमी के दिन हुआ। बचपन से ही स्वच्छन्द प्रवृति प्राप्त किया। हिन्दी, अंग्रेजी के अतिरिक्त बंगला और संस्कृत का भी गहन अध्ययन किया। इसी कारण ही इनकी रचनाओं पर बंगला का प्रभाव स्पष्ट ही दिख पड़ता है। साहित्य के क्षेत्र में निराली प्रकृति के कारण उपनाम 'निराला' हो गया। छायावादी कवियों में सर्वाधिक विद्रोही एवं क्रान्तिकारी प्रकृति के थे। अपने जीवन में गरीबी की मार झेलने तथा पत्नी, पुत्री की मृत्यु के पश्चात् भी कभी अपने विवेक को खोने नहीं दिया। उनके विद्रोही तेवर के पीछे भावुक तथा कोमल हृदय छिपा हुआ था। असहाय गरीबों के प्रति अपार करूणा से पूरित उनका हृदय था, जिसकी अभिव्यक्ति हमें समय–समय पर उनकी रचनाओं में देखने को मिलती है। महाप्राण निराला के उदात्त और ओज से युक्त व्यक्तित्व के समान ही उनका कृतित्व पक्ष भी महान और व्यापक है। कृतित्व से उनके व्यक्तित्व को अलग कर नहीं देखा जा सकता। यद्यपि उनका जीवन विरोधों एवं संघर्षों में बीता। उनकी कई रचनाएँ ठुकरायी जाती रही। स्वयं उनका जीवन पर्याप्त विरोध होता रहा। उनके संघर्षों की अभिव्यक्ति को हम उनकी रचनाओं में भी देख सकतें हैं।

Scanned with CamScanner

प्रकृति के प्रति अनुराग और उसका सजीव चित्रण यूँ तो सभी कवियों की कविताओं में दिखाई देता है। क्योंकि प्रकृति प्रेरक शक्ति के रूप में उनके सृजन कर्म का हिस्सा है। प्राकृतिक उपादानों को आधार बनाकर या उनका मानवीकरण कर जगत की क्रूर सच्चाईयों को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त करते हें। रवीन्द्रनाथ का 'सांध्य–संगीत' कविता इसका अन्यतम उदाहरण है। इस कविता में कवि अज्ञात दुख से पीड़ित है, इसलिए वह संध्या को सम्बोधित करते हुये कहते है–

''बड़ो व्यथा बाजिधे प्राणे, संध्या
तुई धीरे–धीरे आय
काछे आय, आरो काछो आय,
संगीतहारा हृदय आमार
तोर बुके लुकाइते चाय''[2]

अर्थात्

''प्राणों में व्यथा बजती है, संध्या
तुम धीरे–धीरे आओ।
पास आओं, और भी पास,
साथीविहीन हृदय मेरा
तुम्हारे हृदय में छिपना चाहें।''

निराला ने भी 'संध्या सुन्दरी' शीर्षक कविता में संध्या का मानवीकरण करते हुये एसे प्रेरक व्यक्तित्व के रूप में दिखाने का प्रयास किया है–

''दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या–सुन्दरी परी–सी
धीरे,धीरे,धीरे
मदिरा की वह नदी बहाती आती
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला वह एक पिलाती
सुलाती उन्हें अंक पर अपने
दिखलाती फिर विस्मृति के वह कितने मीठे सपनें
अर्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती वह लीन
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक विहाग।'' (संध्या–सुन्दरी)[3]

रवीन्द्रनाथ का प्रकृति वर्णन केवल संध्या तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वे बैशाख का वर्णन करते हुये कहते हैं।

''छोड़ों डाक, हे रूद्र बैशाख

Scanned with CamScanner

भंगिया मध्यांह तंद्रा जागि उठि बाहिखि द्वारे
चेये रव प्राणी शून्य दग्धतृण दिगंतेर पारे
निस्तब्ध निर्वाक
हे भैरव, हे रूद्र बैशाख''[4]

निराला ने भी ज्येष्ठ को आधार बनाकर कविता लिखा–

''ज्येष्ठ! क्रूरता कर्कशता के ज्येष्ठ।
सृष्टि के आदि
वर्ष के उज्ज्वल प्राणि प्रकाश।
अंतः सृष्टि के जीवन के हे अंत।
विश्व के हे व्याधि।
चराचर के हे निर्दल त्रास
सृष्टि भर के व्याकुल आह्वान अचल विश्वास
देते हैं हम तुम्हें प्रेम आमंत्रण
आओं जीवन–शमन, बन्धु, जीवन धन''[5]

इस तरह निराला और रवीन्द्रनाथ के प्रकृति वर्णन में इतनी गम्भीरता और रूद्र वर्णन दिखलाई पड़ता है। चूँकि निराला स्वभाव से ही विद्रोही थे, उनके विद्रोही मन का ऐसे भावों से एकैक्य हो जाना अपेक्षा कृत अधिक स्वभाविक है।

मानवतावाद की स्थापना हर रचनाकर का दायित्व होता है। रचना कर देना ही रचनाकर की प्रतिबद्वता को दर्शाता नहीं है। बल्कि समाज में उपेक्षित जन की पीड़ा उनकी तकलीफ, दुख संघर्षपूर्ण समाज में दीनतर होती जा रही उनकी स्थिति को भी व्यक्त करना होता है। रवीन्द्रनाथ 'गीतांजलि' में सर्वहारा, कृषक, मजदूर का चित्रण करते हुए कहते हें–

''येथाय थाके सवार अधम दीनेर हते दीन
सेड़खाने ये चरण तोमार राजे
सबार पीछे सबार नीचे
सब हारादारे माझे''[6]

निराला भी 'दीन' शीर्षक कविता में सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को व्यक्त करते हुये कहते हैं–

''सह जाते हो पीड़ा उप्त्पीड़न की
क्रीड़ा सदा निरंकुश नग्न
और जगत की ओर ताककर
दुख हृदय का क्षोभ त्यागकर
सह जाते हो''[7]

रवीन्द्रनाथ ने सर्वहारा वर्ग की पीड़ा का एक और भी चित्रण किया है, जो पूरे वातावरण को मार्मिक बना देता है।

''तिनि गछेन येथाय माटि मेड़े

Scanned with CamScanner

करछे चाष–चाष
पाथर मेड़े काटछे येथाय पथ,
खाटछे बारो मास।''[8]

निराला ने भी 'तोड़ती पत्थर' शीर्षक कविता में एक कर्मरत–श्रमरत पत्थर तोड़ने वाली स्त्री का चित्रण करते हुए सर्वहारा वर्ग की शोषित स्थिति का चित्रण करते हुए कहते है।

''वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर
कोई ना छायादार
पेड़ जिसके तले वह बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय–कर्म–रतमन
गुरू हथौड़ा हाथ
करती बार–बार प्रहार
सामने तरू–मालिका अट्टालिका प्राकार''[9]

रवीन्द्रनाथ एवं निराला क्रमशः दोनों ने ही प्रेमपरक कविताएँ लिखी हैं प्रेम को लक्ष्य बनाकर संयोग और वियोग दोनों पक्षों का चित्रण इनकी रचनाओं में मिलता है। रवीन्द्रनाथ अपने प्रसिद्व काव्य संग्रह ''सोनारतरी'' में 'मानस–सुन्दरी' नामक कविता में अपने ह्यदयगत भावों को व्यक्त करते हुए कहतें हैं–

''ऐसो तुमि प्रिये
आजन्म–साधन–धन सुन्दरी आमार
कविता कल्पना– लता।''[10]

निराला भी अपनी प्रसिद्व कविता संग्रह 'अनामिका' में अपनी ''प्रिया से'' शीर्षक कविता में कहते है–

''मेरे जीवन की है तू सरस कविता
मेरे तरू की है तू कसुमित
प्रिये कल्पना लता।''[11]

स्वच्छन्द प्रेम का उद्गार रवीन्द्र की मानस सुन्दरी कविता की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है–

''आज कोनो काज नय, सब फेले दिये।
छेदों बन्द ग्रंथ गीत, एसो तुमि प्रिय।''[12]

निराला की 'प्रगल्भ प्रेम' शीर्षक कविता में प्रेम की ऐसी ही उत्कट अभिवक्ति को हम देखते है–

''आज नहीं है मुझे और कुछ चाह

Scanned with CamScanner

अर्थ विकट इस हृदय कमल में आ तू।''[13]

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि रवीन्द्रनाथ और निराला भले ही दो अलग–अलग भाषा के रचनाकार हैं पर उनकी मन तथा आत्मा एक सी है। बंगाल की धरती पे जन्में इन दो महान रचनाकारों ने क्रमशः बंगला और हिन्दी साहित्य के जरिये पूरे विश्व में ज्ञान, प्रेम, नैतिकता का अलख जगाने का प्रयास किया। प्रकृति चित्रण का प्रश्न हो या सर्वहारा और शोषितों की दीन स्थिति या प्रेम की तीव्र उत्कट मनः स्थिति इन सभी का नैसर्गिक एवं सजीव अंकन कवियों ने अपनी लेखनी द्वारा लेखनीबद्व किया है। सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिबद्वता के आलोक में भाषा, जाति और राष्ट्रीयता की संकुचित और संकीर्ण भावना को त्यागकार सृजन कौशल द्वारा सच्चे पथ प्रदर्शक की भाँति पूरे विश्व को ज्ञान, चेतना तथा विश्वमानवातावादी एकत्व की भावना को आलोकित करने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ला राजश्री, तुलनात्मक साहित्य : व्यवहारिक प्रयोग, शुक्ला राजश्री, भूमिका, पृष्ठ संख्या –4, स्वस्ति ग्राफिक्स, कोलकता– 700001, प्रथम संस्करण –2013
2. बंधोपाध्याय सोमा, रवीन्द्र काव्य में नारी एवं प्रेम, शब्दार्थ पत्रिका, वशिष्ठ अनूप, अंक–2 पृष्ट संख्या–31–32
3. सिंह दूधनाथ, निराला आत्महंत आस्था, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1, सांतवां संस्करण– 2009, पृष्ठ संख्या–27
4. शुक्ला राजश्री तुलनात्मक साहित्य : व्यवहारिक प्रयोग, सिंह मंजुरानी छायावादी काव्य और रवीन्द्र, पृष्ठ संख्या–78, स्वस्ति ग्राफिक्स, कोलकता–700001, प्रथम संस्करण –2013
5. वही, पृष्ठ संख्या–79
6. वही, पृष्ठ संख्या–80
7. सिंह दूधनाथ, निराला आत्महंत आस्था, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1, सातवां संस्करण–2009, पृष्ठ संख्या–45
8. वही, पृष्ठ संख्या–96
9. kavitakosh.org
10. शुक्ला राजश्री, तुलनात्मक साहित्य : व्यवहारिक प्रयोग,शर्मा रामविलास, शेली और रवीन्द्रनाथ पृष्ठ संख्या –58, स्वस्ति ग्राफिक्स, कोलकता– 700001, प्रथम संस्करण –2013
11. वही, पृष्ठ संख्या–60
12. वही, पृष्ठ संख्या–61
13. वही, पृष्ठ संख्या–63

Scanned with CamScanner